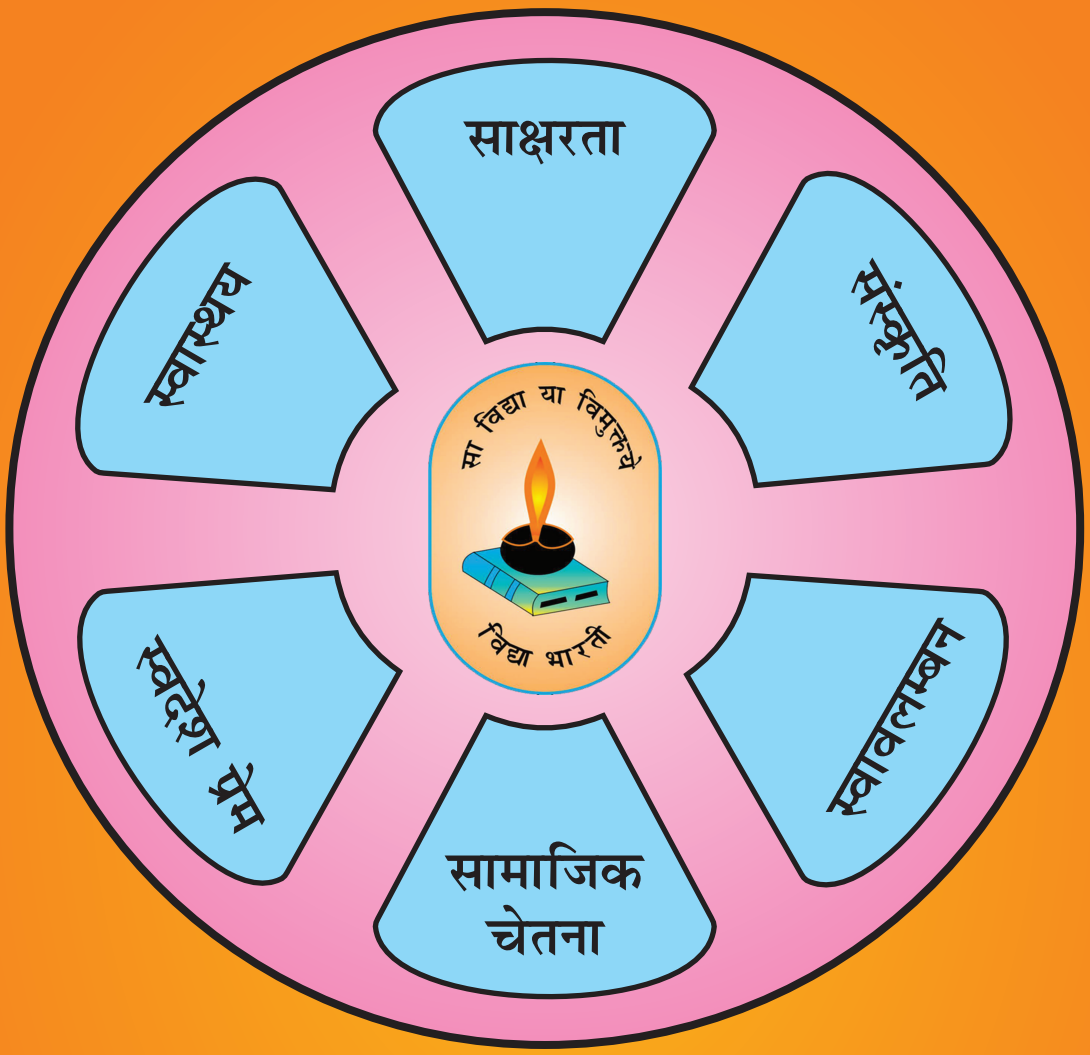

विद्या भारती
संस्कार केन्द्र निर्देशिका

विद्या भारती
संस्कार केन्द्र निर्देशिका

संस्कार केन्द्र निर्देशिका

प्रथम संस्करण : जनवरी–2021

लेखक

सुभाष शर्मा

प्रकाशक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, लाजपतराय मार्ग

कुरुक्षेत्र–136118

दूरभाष: 01744–259941

E-mail : vbukkkr@yahoo.co.in

Website : vbukprakashan.com

Copyright © विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

मूल्य : ₹50/–

प्राक्कथन

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान भारतवर्ष में शिक्षा जगत का प्रसिद्ध नाम है। अशासकीय शिक्षा क्षेत्र में यह राष्ट्र का अग्रणी संगठन है।

यह संगठन राष्ट्रीय भाव से ओतप्रोत व संस्कारित शिक्षा प्रदान करता है।

सबके लिए शिक्षा की भावना लिए संगठन द्वारा औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के केंद्र देश भर में चलाए जा रहे हैं। नगरों, कस्बों व गाँव में बड़े केंद्रों पर औपचारिक विद्या मंदिरों की श्रृंखला है, तो सुदूर वनवासी, पर्वतीय, गिरीकंदराओं के क्षेत्र में, सेवा बस्ती, कठिन व संवेदनशील स्थानों पर अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों का संजाल है। सेवा बस्तियों में यह शिक्षा संस्कार केंद्रों व एकल विद्यालयों के माध्यम से दी जाती है।

गत कुछ समय से अपने क्षेत्र व स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी 'संस्कार केंद्र निर्देशिका' की आवश्यकता अनुभव हो रही थी, जिससे संस्कार केंद्र के भैया-बहनों में सर्वांगीण विकास के सभी आयामों व मानवीय गुणों (सेवा, समरसता, सहयोग, स्वदेशी, संवेदनशीलता व आचरण) की शुद्धता का विकास हो सके।

विद्या भारती के माननीय उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र जी अत्री व प्रान्त के माननीय संगठन मंत्री श्री रवि कुमार जी के मागदर्शन में किए गए सद्प्रयास के रूप में यह पुस्तिका आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इसके लेखन में प्रयुक्त पाठ्य सामग्री के लिए जिन बन्धु-भगिनियों व सन्दर्भों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है, उन सभी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरा विश्वास है कि यह अद्यतन 'संस्कार केंद्र निर्देशिका' अपने उद्देश्य पूर्ति में सहायक व सफल होगी। आपके सुझावों का स्वागत और हृदय से आभार।

लेखक
सुभाष शर्मा
प्रान्त सह सेवा शिक्षा प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

अनुक्रमणिका

क्र॰	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	संस्कार केंद्र क्यों ?	05
2.	संस्कार केन्द्र व्यवस्था	06
3.	संस्कार केन्द्र में करणीय (आचार्य / दीदी द्वारा)	06
4.	संस्कार केंद्रों पर होने वाले क्रियाकलाप	07
5.	संस्कार प्रक्रिया	08
6.	वन्दना एवं प्रार्थना	09
7.	प्रात: स्मरण, एकात्मता मंत्र व स्तोत्र	13
8.	सुभाषित	20
9.	अमृत वचन	22
10.	सीख के दोहे	23
11.	संकीर्तन व आरती	26
12.	देशभक्ति गीत	35
13.	बाल गीत	41
14.	प्रेरक कथन	44
15.	प्रेरक प्रसंग	45
16.	बोध कथाएं	49
17.	महान जीवन परिचय	54
18.	भाषा शिक्षण (हिन्दी)	60
19.	भाषा शिक्षण (अंग्रजी)	66
20.	गणित शिक्षण	69
21.	पर्यावरण अध्ययन	73
22.	सामान्य ज्ञान	75
23.	जीवन व्यवहार के कुछ बिन्दु	78
24.	खेल	79
25.	सूर्य नमस्कार	83
26.	घर को संस्कारक्षम बनाने के लिए सुझाव	85
27.	लोक व्यवहार की जानकारी	85
28.	अनमोल वचन	86
29.	भारत दर्शन	87
30.	वन्दे मातरम्	89
31.	नाम व पते	90

संस्कार केंद्र क्यों ?

अपना भारतवर्ष विविधताओं से भरा देश है। मैदान, पहाड़, तटीय प्रदेश, रेगिस्तान, पठार व वनवासी क्षेत्र इसकी सुंदरता भी बढ़ाते हैं और कहीं-कहीं जटिलता भी पैदा करते हैं। इसी प्रकार हम भारत के लोगों का खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन, रीति-रिवाज व व्यवहार भी भिन्न-भिन्न प्रकार का है।

इतने बड़े और विविधता पूर्ण राष्ट्र को एकता का भाव प्रदान करने के अनेक आयाम हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है 'शिक्षा'। शिक्षा का औपचारिक स्वरूप सभी जगह पहुंचाना संभव नहीं हुआ तो अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से इसका प्रयास हुआ। विशेष रूप से ग्रामीण, वनवासी, सीमावर्ती, संवेदनशील क्षेत्रों एवं नगरों में सेवा बस्ती में प्रयास प्रारम्भ हुए।

राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिए देश के सभी नागरिकों का मुख्य धारा में बने रहना आवश्यक है। जाति, पंथ, मत व क्षेत्र के भेदों को दूर करने के लिए 'संस्कार युक्त राष्ट्रीय शिक्षा' इसके लिए नितांत आवश्यक है। विद्यालय अथवा शिक्षा के अन्य औपचारिक केंद्रों के विकल्प के रूप में अनौपचारिक शिक्षा हेतु संस्कार केंद्रों का प्रारंभ हुआ, जो अत्यंत सफल सिद्ध हुआ।

ऐसे ग्रामों और बस्तियों में अनेक प्रतिभाएँ भी होती हैं जिनको निखारने का कार्य तथा बस्तियों में फैली अनेक स्थानीय सामाजिक बुराइयों के निवारण का काम, राष्ट्रीय जागरण के कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य संस्कार केंद्रों के माध्यम से सहज रूप से हो रहा है। विद्या भारती द्वारा संचालित ऐसे 11353 (सन् 2020 तक) संस्कार केन्द्र व एकल विद्यालय देश के ऐसे ही क्षेत्रों में राष्ट्रीय भाव के दीपक प्रज्वलित किए हुए हैं।

भविष्य में इनकी आवश्यकता व प्रसार दोनों ही बढ़ेंगे। इसका कारण यह है कि स्थानीय आचार्य/दीदियाँ अपने केन्द्र व उसके आसपास के समग्र परिवेश से परिचित होते हैं। वे स्थानीय सहयोग से वहाँ की समस्याओं का निराकरण शीघ्र कर सकते हैं। वहाँ के सभी बालकों से आत्मीयता होने के कारण शिक्षा में संस्कार देने का कार्य सहज रूप में हो सकता है और वह स्थायी भी होता है। अनेक क्षेत्रों में किए जा रहे ऐसे प्रयासों के सुपरिणाम आज समाज में सर्वत्र दिखाई देने लगे हैं इसलिए एकल विद्यालयों/संस्कार केन्द्रों की आवश्यकता है।

संस्कार केन्द्र व्यवस्था

संस्कार केन्द्र शिक्षा व संस्कार दोनों का समन्वित रुप है। भले ही यह अनौपचारिक है किन्तु इसके संचालन हेतु कुछ औपचारिक सामान्य व्यवस्थाएँ होती हैं।

सर्वप्रथम तो केन्द्र किसी न किसी विद्यालय के सान्निध्य में ही चलता है। विद्यालय की ओर से केन्द्र के सुचारु संचालन हेतु एक सेवा शिक्षा समिति बनती है। जिसमें प्रधानाचार्य, संरक्षक आचार्य, पूर्व छात्र, सेवा विभाग का छात्र, (ये बाल भारती, शिशु भारती अथवा कन्या भारती में एक सेवा प्रमुख छात्र भैया-बहन होता है।) अभिभावक व प्रबन्ध समिति का एक-एक सदस्य होता है। इस समिति को विद्यालय सेवा शिक्षा समिति कहते हैं। ये सभी केन्द्र की संभाल हेतु समय-समय पर केन्द्र में जाते हैं। जिस ग्राम/बस्ती में संस्कार केन्द्र है, वहाँ से संचालक शिक्षक (भैया/बहन), एक अथवा दो प्रबुद्ध नागरिक (महिला अथवा पुरुष) व विद्यालय का संरक्षक आचार्य मिलकर संस्कार केन्द्र संचालन समिति बनती है जो केन्द्र का नियमित संचालन करती है।

इसके अतिरिक्त व्यवस्थाओं में बालकों के लिए कक्ष, बिजली, प्रसाधन, पानी, टाट-पट्टी या दरी, कुर्सी, श्यामपट्ट, चॉक, उपस्थिति पंजिका, कार्यवाही पंजिका, चित्र (सरस्वती, ऊँ, भारतमाता) आदि आवश्यक हैं।

संस्कार केन्द्र में सामान्यत: 8 वर्ष से लेकर 14 वर्ष तक के भैया-बहन सायंकाल 2 घण्टे के लिए आते हैं। जहाँ आचार्य-दीदी वन्दना (सरस्वती वन्दना, गीत, भजन, प्रेरक प्रसंग, दोहे, श्लोक) भाषा शिक्षण (हिन्दी व अंग्रेजी), गणित व पर्यावरण विज्ञान (सामान्य ज्ञान), खेल (शिक्षाप्रद, भाव पूर्ण, मस्ती भरे) आदि के माध्यम से शिक्षा देते हैं।

विशेष : केन्द्र के आचार्य बालकों के केन्द्र में आते समय व केन्द्र से घर जाते समय विशेष ध्यान दें तथा बालकों के घरों में व बस्ती में निरन्तर आत्मीय सम्पर्क, सम्बन्ध बनाए रखें।

संस्कार केन्द्र में करणीय (आचार्य / दीदी द्वारा)

संस्कार केन्द्र में आने वाले भैया-बहनों को गुण प्रदान करना, यह आचार्य/दीदी का लक्ष्य होता है। इसके लिए उसे 2 घण्टे का समय भिन्न-भिन्न क्रिया-कलापों में समायोजित करना होता है। सामान्यत: 2 घण्टे (120 मिनट) को हम तीन भागों में बांटें।

1. **वन्दना** (20 मिनट) इसमें प्रार्थना (हे हंसवाहिनी), गायत्री मन्त्र, शांति मन्त्र (सर्वेभवन्तु सुखिन:) व गीत (विद्या भारती अखिल भारतीय गीत) प्रतिदिन

करवाएँ। हनुमान चालिसा, दोहे, श्लोक, चौपाई, अन्य गीत, कहानी व प्रेरक प्रसंग आदि प्रतिदिन के हिसाब से बाँट-बाँट कर करवाएँ। इसमें एकात्मता स्तोत्रम् के कुछ श्लोक व एकात्मता मन्त्र भी जोड़ सकते हैं। 1 मिनट का ध्यान प्रतिदिन अवश्य होना चाहिए।

2. **शिक्षण** (80 मिनट) इसमें हिन्दी, अंग्रेजी, पर्यावरण विज्ञान व गणित विषयों का शिक्षण करवाना है। आवश्यक नहीं कि प्रतिदिन हर विषय का शिक्षण हो। ध्यान रहे, हमें बालक की विषय के प्रति (अध्याय, प्रश्नमाला के विषय में) संकल्पना स्पष्ट करनी व रूचि बढ़ानी है। उसका पाठ्यक्रम पूर्ण करना हमारा उद्देश्य नहीं है। इसमें श्याम पट्ट का व क्रिया आधारित शिक्षण (बच्चों की अधिकतम सहभागिता) का उपयोग बेहतर रहता है।

3. **खेल** (20 मिनट) गणित, सामान्य ज्ञान व भाषा (हिन्दी व अंग्रेजी) का ज्ञान कराने वाले खेल करवाएँ। मण्डल के खेल, दौड़ के खेल, बैठकर या खड़े होकर होने वाले खेल बच्चों में ज्ञान, मस्ती, राष्ट्रीय भाव को भरने वाले हों, ऐसा ध्यान रखें।

अन्य : बालकों का आने पर स्वागत, पदवेश पंक्तिबद्ध हो, पंक्तियों में बैठाना, उपस्थिति लेना, भैया-बहन व आचार्य-दीदी का सम्बोधन करवाना, उत्सव व जयन्तियों पर बस्ती में परस्पर सहभागिता करना, वर्तमान छात्रों एवं पूर्व छात्रों के यहां गृह संपर्क नियमित, पाक्षिक या मासिक बस्ती सम्पर्क करना व विद्यालय में मासिक प्रशिक्षण हेतु जाना संचालक आचार्य-दीदी के लिए करणीय है।

संस्कार केंद्रों पर होने वाले क्रियाकलाप

1. **वंदना :-** सरस्वती वंदना (प्रार्थना), ब्रह्मनाद, ध्यान, गायत्री मंत्र, शांति पाठ आदि। सदाचारी बातें, गीत, कथा, कहानी, बोध कथा, प्रेरक प्रसंग आदि से वंदना प्रभावी बनती है।

   मां सरस्वती, ऊँ व भारत माता के चित्र, धूप, दीप, पुष्प आदि से वातावरण संस्कारी बनता है।

2. **खेल :-** रुचिकर व शिक्षाप्रद खेल, आसन, सूर्य नमस्कार आदि के माध्यम से शिक्षा, संस्कार, देशप्रेम, कुशलता, अनुशासन व साहस का निर्माण होता है।

3. **नैतिक शिक्षा :-** गीत, आरती, चित्र परिचय, चौपाई, हनुमान चालीसा आदि से नैतिकता बढ़ती है।

4. **साक्षरता :-** विषयों का प्राथमिक ज्ञान व फिर उनकी मूल समस्याओं की पूर्ति

करना। केवल पाठ्यक्रम पूरा नहीं करना बल्कि विषय की मूल जानकारी देना।

5. **नैमित्तिक कार्यक्रम :-** पर्व, जयंती व उत्सवों का आयोजन करना। प्रतियोगिताएं करना, सत्संग, हवन, प्रवचन, प्रदर्शनी, चलचित्र दर्शन आदि नैमित्तिक कार्यक्रम करना।

6. **परिवार भाव :-** बस्ती परिवारों से घनिष्ठ सम्पर्क करना। सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूक करना। सामाजिक परिवर्तन का घटक बनना।

उपरोक्त में स्थानीय आधार पर संस्कार विषय जोड़कर संस्कार केंद्र/एकल विद्यालय को सामाजिक चेतना का केंद्र बनाना।

संस्कार प्रक्रिया

- संस्कारों का व्यक्तित्व विकास में बहुत महत्त्व है। व्यक्ति के पास पैसा, शक्ति, बुद्धि व कौशल होने पर भी यदि संस्कार नहीं है तो सब कुछ व्यर्थ है। अतः सबसे पहले संस्कारों को पुष्ट करने का प्रयास करना चाहिए।
- छोटी आयु के बालकों की संस्कार ग्रहण करने की क्षमता अधिक होती है। बढ़ती आयु के साथ-साथ यह कम होती जाती है।
- पाँच वर्ष की आयु की अपेक्षा 2 वर्ष की आयु में, 2 वर्ष की अपेक्षा 1 वर्ष की आयु में, 1 वर्ष की आयु की अपेक्षा 6 मास में संस्कार ग्रहण करने की क्षमता अधिक होती है। गर्भावस्था में यह क्षमता सर्वाधिक होती है। अष्टावक्र, प्रह्लाद व अभिमन्यु इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं।
- संस्कार तीन प्रकार के होते हैं - 1. पूर्वजन्म के संस्कार 2. अनुवांशिक संस्कार 3. वातावरणजन्य संस्कार। पूर्वजन्म के संस्कार अधिक प्रभावशाली होते हैं। अनुकरण, प्रेम, बड़ों के विचार, व्यवहार आदि से ये संस्कार प्राप्त होते हैं। वातावरण के संस्कार परिवेश से मिलते हैं। खाना-पीना, वेश, विचार, साहित्य आदि से ये निर्मित होते हैं।
- इस जन्म के संस्कार, वातावरण, भावनाएँ अगले जन्म के लिए पूर्वजन्म के संस्कार बन जाते हैं।
- माता-पिता से मिले (रक्त संबंधी) संस्कार आनुवांशिक संस्कार होते हैं।
- इन सभी संस्कारों की सामूहिक रीति से संस्कृति बनती है। यह संस्कृति ही राष्ट्र का स्वभाव होती है।
- 5 वर्ष से 15 वर्ष तक की आयु में संस्कार व बुद्धि का समावेश होता है। उसके बाद इनका दृढ़ीकरण होता रहता है।

दीप स्तुति

दीपज्योतिः परम ज्योतिः, दीपज्योतिः जनार्दनः।
दीपो हरतु मे पापं, दीपज्योति! नमोस्तुते।।
शुभं करोतु कल्याणम्, आरोग्यं सुख सम्पदः।
द्वेषबुद्धिविनाशाय, आत्मज्योतिः नमोऽस्तुते।।
आत्मज्योतिः प्रदीप्ताय, ब्रह्मज्योतिः नमोऽस्तुते।
ब्रह्मज्योतिः प्रदीप्ताय, गुरुर्ज्योतिः नमोऽस्तुते।।

अर्थ

1. दीपक की ज्योति स्वयं प्रकाशमान भगवान का स्वरूप है । हे दीपज्योति! मेरे पापों का हरण कीजिए, मैं आपको नमस्कार करता हूँ ।
2. मेरी द्वेषपूर्ण बुद्धि को विनष्ट करने के लिए मंगल, कल्याण, सुख, आरोग्य एवं गुण रूपी सम्पदा प्रदान कीजिए। हे आत्मज्योति! मैं आपको प्रणाम करता हूँ ।
3. आत्मज्ञान को प्रकाशित करने के लिए ब्रह्म ज्योति को प्रणाम तथा ब्रह्म ज्योति को प्रकाशित करने वाली हे गुरु ज्योति! तुमको भी प्रणाम ।

भोजन मंत्र

अन्न ग्रहण करने से पहले, विचार मन में करना है।
किस हेतु से इस शरीर का, रक्षण-पोषण करना है।
हे परमेश्वर! एक प्रार्थना, नित्य तुम्हारे चरणों में।
लग जाए तन-मन-धन मेरा, मातृभूमि की सेवा में।

मंत्र

ओ३म् ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।
ओ३म् सह नाववतु सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ओ३म् शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!

सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर् देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।। 1।।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमां आद्यां जगद्व्यापिनीम्।
वीणा पुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।। 2 ।।

अर्थ :- विद्या की देवी सरस्वती-कुन्द के फूल के समान, चन्द्रमा के समान तथा हिम की भाँति श्वेत वर्ण की है, सफेद वस्त्र धारण करती है, जिसके हाथ में वीणा दण्ड सुशोभित है और जो श्वेत कमल पर विराजमान है, ब्रह्मा, विष्णु और महेश जिनकी सदैव वन्दना करते हैं, समग्र जड़ता और अज्ञानता को दूर करने वाली माँ सरस्वती मेरा पालन करे **।।1।।**

सफेद रंग वाली, सम्पूर्ण जगत में व्याप्त आद्य शक्ति, परब्रह्म के विषय में किये गए चिन्तन के सार को धारण करने वाली, अभयदायिनी, अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करने वाली, हाथों में वीणा, पुस्तक और स्फटिक की माला लिए हुए पद्मासन पर विराजित, बुद्धि देने वाली, ऐश्वर्य से अलंकृत माँ परमेश्वरी भगवती देवी सरस्वती की मैं वन्दना करता हूँ **।।2।।**

सरस्वती प्रार्थना

हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी, अम्ब विमल मति दे - 2
जग सिरमौर बनाएँ भारत, वह बल-विक्रम दे,
अम्ब विमल मति दे।

साहस शील हृदय में भर दे, जीवन त्याग तपोमय कर दे
संयम, सत्य, स्नेह का वर दे, स्वाभिमान भर दे।। 1 ।।
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी, अम्ब विमल मति दे - 2

लव-कुश, ध्रुव, प्रह्लाद बनें हम, मानवता का त्रास हरें हम,
सीता, सावित्री, दुर्गा माँ, फिर घर-घर भर दे।। 2 ।।
हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी, अम्ब विमल मति दे - 2

भावार्थ :- हम सब वंदना करते हैं कि हे हंस के वाहन पर आरूढ़ ज्ञान दायिनी मां सरस्वती (जब ज्ञान विवेक पर आरूढ़ होता है तब ज्ञान सन्मार्गी बनता है, यहां पर हंस को नीर क्षीर विवेकी ही कहा गया है) मुझे विमल मति अर्थात् निश्चल बुद्धि प्रदान करें ।

यहां पर मां सरस्वती के लिए तीन संबोधनों का प्रयोग किया गया है-हे हंस वाहिनी, ज्ञानदायिनी और अंब। अंब का अर्थ है 'माँ'। शिशु अबोध है, उसकी प्रत्येक आवश्यकता उसकी मां उससे अधिक समझती है और उसे तत्काल पूर्ण भी करती है, लेकिन वह बड़ा हो जाए तो मां मांगे बगैर नहीं देती। मां सिखाना चाहती है कि बालक अपनी आवश्यकता जाने, समझे, अभिव्यक्त करना सीखे। क्योंकि आगे चलकर उन्हें पाने के संपूर्ण प्रयत्न स्वयमेव करना सीखकर ही वह सक्षम होगा, समर्थ होगा, स्वावलंबी होगा और स्वावलंबी होकर ही तो स्वतंत्र रह सकेगा तथा विमुक्त होगा।

आगे माँ सरस्वती से अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए याचना की है कि माँ मेरा भारत संसार के लिए शिरोधार्य हो, विश्वमूर्ति की मुकुट मणि बने, अर्थात् संसार में सर्वश्रेष्ठ बने इसलिए मुझे तन, मन, बुद्धि और आत्मा के स्तर पर बल प्रदान करें। क्योंकि श्रेष्ठ से श्रेष्ठ संकल्प भी बल के अभाव में वंचित ही रह जाते हैं। बल के साथ-साथ आगे बढ़ते रहने के लिए विक्रम की भी याचना की है।

भारत को जग सिरमौर बनाने हेतु आगे बढ़ते हुए अनेक प्रकार की चुनौतियां सामने आएंगी अत: उन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमने साहस मांगा है क्योंकि साहस के अभाव में क्रिया शक्ति सुषुप्त रहती है। साहस दुस्साहस न बन जाए इसलिए शील अर्थात चरित्र की मांग की है। जीवन स्वार्थी न हो जाएं इसलिए मां से त्याग की मांग की है। सुखों के साथ साधना नहीं होती साधना के लिए तप करना पड़ता है इसलिए मां शारदा से तप मांगा है। धर्म के सार सत्य को मांगा है और सत्य पर टिके रहने के लिए संयम की मांग की है और अंत में स्वाभिमान की मांग की है।

दूसरा चरित्र ध्रुव का आता है उत्तराधिकार के कारण पारिवारिक और सत्ता संघर्ष को टालते हुए समाज को विघटन से बचाया। जीवन का ध्येय छोटा नहीं होना चाहिए, अपने जीवन से संदेश दिया।

साहस, सत्य, शील, संयम और सदाचार का जीवंत स्वरूप है प्रहलाद। इन्हीं गुणों के फलस्वरूप वे स्तंभवत जड़ता से भी नृसिंह रूपी चेतना का प्राकट्य करा सकने में सक्षम सिद्ध हुए। नृसिंह जैसी चेतना से ही आतंक का विनाश हो सकता है। उन्होंने अनुच्छेद भ्रामक

और केवल स्वार्थ की प्रेरणा देने वाली शिक्षा का मुखर विरोध किया।

जीवन साधना के लिए सीता और मृत्यु साधना के लिए सावित्री और संगठित शक्ति का प्रतीक मां दुर्गा के चरित्र का चयन किया गया है।

मां सरस्वती से प्रार्थना की है कि हे मां लव-कुश, ध्रुव, प्रहलाद तथा सीता, सावित्री और मां दुर्गा जैसे चरित्रों को घर-घर में भर दो अर्थात हर घर में इस प्रकार के बालक-बालिकाएं जन्म लें ताकि हम भारत को जग सिरमौर बना सकें।

गायत्री मंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अर्थ :- सर्वरक्षक परमेश्वर जो प्राण प्रिय, दुःख विनाशक और सुख स्वरूप है, हम उस जग उत्पादक के वरणीय तेज स्वरूप का ध्यान करते हैं। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करे।

मातृ भू वन्दना

रत्नाकराधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम्।
ब्रह्मराजर्षिरत्नाढ्यां वंदे भारतमातरम्॥

अर्थ :- रत्नाकर (समुद्र) जिसके पैर धोता है, हिमालय जिसका किरीट (मुकुट) है। ब्रह्मर्षि और राजर्षि जैसे रत्नों वाली अर्थात् जिसकी गोद से ब्रह्मर्षि और राजर्षि जैसे रत्नरूप पुत्र पैदा हुए हैं। उस भारत माँ की वन्दना करता हूँ।

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौ शान्तिः अन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिः आपः शान्तिः
ओषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः विश्वेदेवाः शान्तिः ब्रह्म
शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥